तह-रुश

सोमा विश्वास
मो. 8800779218

नहीं नहीं, तह-रुश मेरा नाम नहीं हैं। यह एक खेल है। इस खेल का आवश्यक खिलाड़ी हूँ मैं। मैं या किसी महिला बिना यह खेल मुमकिन नहीं हैं। हाँ, मैं मिश्र देश की एक महिला हूँ। और ये तह-रुश यहाँ का एक अलिखित राष्ट्रीय खेल हैं। बढ़ते हुए गृहयुद्ध के चलते ये खेल और भी लोकप्रिय होता जा रहा हैं। यूरोपीय देशों मे फैलता चला जा रहा है। मिश्र के नागरिक के लिए ये तो बड़ी खुशी की बात है। पूरी दुनिया को खुश होना चाहिये। एक नये खेल की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। पता नहीं फिर भी लोग क्यों डर रहे। यूरोप में जब ये खेल खेला जा रहा है तब तो उन देशों की महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा जोड़ा जा रहा हैं। इस खेल के साथ। हमारे देश की महिला-शरणार्थियों से भी ज्यादा एहमियत इन महिलाओं को दी जा रही हैं। फिर भी पता नहीं क्यूँ।

कुछ दिनों से स्वीडन के एक शरणार्थी शिविर में ठहरी हुई हूँ मैं। यहाँ पर थोड़ी बहुत अंग्रेज़ी सीख रही हूँ ताकि खुद की जरूरतों को समझ पाऊं। दूसरी महिलायों से कुछ अच्छा अंग्रेज़ी बोल पाने की वजह से सारी महिलाएं मुझे अनुवादक बना के कैंप के दफ़्तर में ले जाती हैं। अधिकारी मुझे अंग्रेजी में लिखने-पढ़ने के लिए बोलते हैं। पर मैं तो हूँ अनपढ़। मेरे देश में महिलाओं के लिए लिखना पढ़ना गुनाह है। बंद दरवाजे के उस पार बैठकर थोड़ा बहुत धार्मिक पुस्तकें पढ़ी। इतने में ही हमारा काम चल जाता है। औरत का बाहर जाना तो बिल्कुल नापसंद है हमारे देश के पुरुषों को। अब निश्चित रूप से आप पूछोगे कि तब इस खेल में एक महिला कैसे मुख्य किरदार निभाती हैं। हाँ। जरूर होता है। नहीं तो ये खेल खेला ही नहीं जा सकता।

हमारे उपचार के लिये यहाँ पर एक भारतीय महिला डॉक्टर है। उनके साथ एक दिन मुझे एक दफ़्तर में ले जाया गया। ये कौन-सी जगह है मुझे नहीं पता। डॉक्टर मैम ने बताया कि ये लोग सब पुलिस हैं और हम लोग पुलिस मुख्यालय में आये हैं। एक बड़ा गेट के सामने हम लोग जा के बैठते

हैं। कोई एक टेप रेकॉर्डर मेरे सामने रख कर चलाया जाता हैं। टीवी के पर्दे पर एक विडिओ चालू किया गया। डॉक्टर मैम बता रही है, 'विडिओ में लोग क्या बोल रहे हैं और क्या कर रहे हैं, वो सुन के मुझे पुलिस को बताना हैं। क्यूँकि मैं, मेरी भाषा-संस्कृति और अंग्रेज़ी दोनों ही जानती हूँ, इसीलिए, मैं विडियो देखने लगती हूँ। यहाँ की मार्किट का सामने का एक हिस्सा देख रही हूँ। स्वीडन की जनसंख्या मामूली है इसीलिए अक्सर ये जगह खाली-सी रहती है। वो खाली जगह आजकल शरणार्थियों से भरी रहती है। एक कोने में अचानक भीड़ बढ़ जाती है। इस देश की दो महिलाओं को घेरना शुरू किया है उस भीड़ ने। भीड़ और भी घनी होती जा रही है। वो दो महिलाएं भीड़ में अलग हो जाती है। उन दोनों की डरी हुई हाहाकर भीड़ के शोर में खो गयी। वो शोर और तेज हो गया है। 'ओहो! ये तो तह-रुश चल रहा है।', अचानक मेरे मुँह से निकल आया।

हैरान होकर घूमती हूँ तो देखती हूँ सब स्थिर नज़र से मुझे देख रहे हैं। डॉक्टर मेम मुझे इशारा करती है, मैं फिर से बोलना शुरू करती हूँ। मिश्र का बहुत पसंदीदा एक आदिम खेल है ये। एक साथ बहुत सारे पुरुष एक महिला को चुनते हैं और उसे घेर लेते हैं। महिला की पोशाक से लेकर उसका सब कुछ छेड़ना शुरू हो जाता है। कोई उसकी सीने को अपने सीने से धक्का देता है तो कोई उसकी पीछे का कपड़ा खींच के फाड़ देता है। कोई हाथ पकड़ कर खींचता है तो कोई उसकी खुले स्तन पर हाथ मारता है। वो महिला शर्म व डर से कांपने लगती है। पुरुष उतना ही उसे और नंगा करने लगते हैं। न-न। हमला मत बोलिए इसे। ये तो बस एक खेल है। विडियो देखिए कितना जयकार कर रहे है सारे पुरुष मिलकर। पूरी भीड़ सागर की लहरों जैसी सामने की गैराज में घुस जाती है। लहर उन दो महिलाओं को भी बहा ले गई।

'क्या हुआ? क्यूँ चुप हो गयी?' उसने फिर कहना शुरू किया, 'नहीं-नहीं! डॉक्टर मेम, चुप नहीं हुई। चुप कैसे हो जाऊं? मैं तो बंद आँखों से भी देख पा रही हूँ, उन महिलाओं के साथ अभी खेल का कौन-सा चरण चल रहा है। नियमानुसार वो दोनों अब पूरी तरह से नंगी है। भीड़ और भी बढ़ गई है। सभी नोंचना चाहते हैं इस नए देश की दो नई औरतों के शरीर को। शायद वो दोनों चिल्ला-चिल्लाकर विरोध कर रही हैं। क्यूँकि इस देश में उन्होंने कभी ये खेल नहीं खेले हैं, इसीलिए वो इसे गलत सोच रही है। हाँ! विरोध भी होता है इस खेल में, वह भी कुछ पुरुषों ने ही किया है। बाकी लोग उस बाधा को हटा कर महिला के और नजदीक होते है। स्तन, योनि, नितम्ब। महिला की ये सारे अंशों को नोंच-नोंच कर अपने जीत का आनंद दुगना कर लेते है। विरोध करनेवाले इस खेल में हमेशा ही हारते है। यही नियम है। विडिओ में अभी कोई दिखाई नहीं दे रहा है। गराज के अंदर से सिर्फ जयकार और जयकार सुनाई दे रही है। उफ्फ पेट का निचला हिस्सा जैसे दर्द के मारे अभी फट जायेगा लगता है।'

आँखें खोलती हूँ तो देखती हूँ, मैं कैंप में अपने बिस्तर पर लेटी हुई हूँ। डॉक्टर मेम मेरे सिर पर हाथ सहला रही हैं। वह बोली, 'पुलिस हैडक्वार्टर में, मैं अचेतन हो गई थी। पेट दर्द के मारे। उस दिन की तरह जिस दिन उन्होंने पहली-बार मेरा उपचार किया था। जब मैं इस कैंप में पहुंची थी। दर्द क्यूँ नहीं होगा, डॉक्टर मेम? आतंकवादी शिविर में हर रोज घटने वाला बलात्कार के हिस्सा बनने से पहले भी दो-दो बार मुझे तह-रुश खेल का मुख्य किरदार निभाना पड़ा। आपको पता है, वो दो महिलाओं को अभी हर चरण में जो-जो खेलना पड़ रहा है, बिल्कुल ऐसा ही मुझे भी खेलना पड़ा था। एक बार तो एक पुरुष ने जेब से चाकू निकाल कर मेरी योनि के अंदर चाकू का खेल खेलने लगा था। भीड़ के बाकी लोगों ने तब मेरा हाथ पैर सब पकड़ रखा था। कुछ लोग मेरे होंठ, स्तन और शरीर के बाकी हिस्सों को लेकर खेल रहे थे। मैं उस समय डरी नहीं थी। डरता हुआ दिखना तो उस खेल का एक हिस्सा है।

इस कैंप की महिलाओं से उनकी कहानियां सुन-सुनकर डॉक्टर मैम भी हमें भारत की कहानी बताती है। उन्होंने कहा, 'उस देश में खाप पंचायत गण बलात्कार की राय देते हैं। दलित समाज के पुरुष के अपराध का दंड निर्णय ऐसा होता है कि उनकी घरवाली का बलात्कार करेंगे उच्चवर्ण के पुरुष। कहीं-कहीं तो पंच के सामने ही सामूहिक

बलात्कार करने का आदेश दिया जाता है। ऐसा यहां अक्सर ही होता रहता है। फूलन नाम की एक दलित महिला के साथ उच्चवर्ण के पुरुषों ने सामूहिक बलात्कार किया था। मैम ने बताया फूलन ने बाद में उन सारे लोगों को मार डाला था।' डॉक्टर मैम अभी बता ही रही थी कि मैं बीच में ही टोककर बताने लगी, 'नहीं-नहीं! मेरे देश में ऐसा उल्टा खेल नहीं होता है मैम। और भी तो कितने सारे देशों में खुले आम यौन उत्पीड़न का खेल होता है। सभी देशों की ये बात खबर में नहीं आती है। पर खेल के नियम एक ही होते हैं अक्सर। महिला अपने शरीर के साथ लज्जा भी बचाना चाहती है और ये विकृत मानसिकता वाले पुरुष उसके शरीर और शर्म को नग्न करते हैं। तह-रुश ...एक आदिम सामूहिक यौन उत्पीड़न का एक अलंकारिक नाम।

कल सुबह डॉक्टर मैम के आने पर इस बात की चर्चा करनी जरूरी है। अच्छा मेम, इतने देशों में जब ये खेल होता है, तब क्या इस खेल को ओलंपिक क्रीड़ा में विधिवत शामिल किया जा सकता है? अलिम्पिक क्रीड़ा में भी इस खेल का नियम एक ही रखना होगा मैम। सिर्फ किरदारों के स्थान बदल जायेगा इस बार। अत्यावश्यक एक मात्र खिलाडी होगा एक पुरुष।❑

पृष्ठ सं. 58 का शेष भाग

भवन के बाहर चले गए।

लोग अब उठकर खुशी-खुशी अपने घरों की ओर चलने लगे मगर मैं बोझिल मन से वहीं बैठी मन ही मन सोच रही थी। जातीय बहिष्कृत? वो तो हम पांच हजार वर्षों से हैं ही। बस फर्क इतना है कि तब उच्च जातियों ने किया था, अब अपने कहे जाने वाले लोग कर रहे हैं। ये वही दलित समर्थक हैं जो मंचों पर जातिवाद मिटाने की मांग करते हैं, बहुजन एकता की बात करते हैं, शिक्षित होकर संगठित होने की पैरवी करते है, सामाजिक एकता, क्रांति, उच्च जातियों में शादियों की बात करते हैं। अंतर्जातीय विवाह कर जातियों को खत्म करने की बात करते हैं, महिला उत्पीड़न के समर्थक बनतें हैं। कल फिर मंचों पर छदम नारे लगायेगें, आजादी के स्लोगन बोलेंगे, सब रट्टू तोते बन जायेंगे। जी भरकर कोसेगें अन्य जातियों को। जातिवाद, मनुवाद का आरोप लगाते नजर आयेंगे। जातियों के खात्मे की बात करेंगे लेकिन अपने अंदर पनपते जाति के कीड़े को मरने नहीं देंगे। दलित को दलित अस्वीकार करेंगे लेकिन उच्च जातियों से विवाह संबंध बनाने की वकालत करेंगे। लोग! जो आज फैसले को फरमान मानकर खुशी-खुशी लौट रहे हैं, वो फिर यहीं आयेंगे। वो फिर यहीं आयेंगे।

घर जाने की हड़बड़ाहट में लोगों के चलायमान शरीर, हिलते हुए हाथ, एक-दूसरे से भीड़ के टकराते कंधे, ऐसे लग रहे थे जैसे पंचशील और नीले झंडे उठाएं हुए भीम सैनिक, अवसरवादी नेताओं का झुंड, बहकावे, भटकाव, मुखौटिया चेहरे, तमाशबीन भीड़, जो समता और समानता की आवाज उठा रहे हों। आपसी आवाजें जैसे मंचों के छद्म नारे लगाते हमारे लोग। फिर लौटेंगे।

ये यहां फिर लौटेंगे इसी स्थान पर क्योंकि जन्म से पूर्व ही बच्चा जाति की इन अंकुरित कोंपलों को लेकर धरती पर आता है और ये रक्तबीज की भांति अनेक जातियों रूपी शरीर में जन्म लेती ये मनुष्य जाति, जिनकी जड़े बरगद की जड़ों की भांति समाज रूपी मिटटी में नीचे ही नीचे फैलती जाती हैं। इसे मिटा पाना आसान नहीं होगा। मैं निराश होकर अपनी जगह से उठी और थके हुए कदमों से भीड़ के पीछे चल पड़ी। मैंने मुरझाये हुए चेहरे से अपने कमरे में प्रवेश किया। पलंग पर पड़ी आधी खुली किताब 'जाति का समूल विनाश' मेरा मुँह चिड़ा रही थी।❑

डॉ. आंबेडकर कहते हैं

पति और पत्नी के संबंध घनिष्ठ मित्रों की तरह होने चाहिए।

बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

भाग्य में विश्वास करने की बजाए अपनी शक्ति और कर्म में विश्वास रखों।

यदि आप संयुक्त एकीकृत आधुनिक भारत चाहते हैं तो सभी धर्मों के शास्त्रों की प्रभुसत्ता का अंत करना होगा।